100 Years of the Ol Chiki Script by Pandit Raghunath Murmu

The Ol Chiki script, developed in 1925 by Pandit Raghunath Murmu, represents a landmark achievement in India's tradition of indigenous linguistic innovation. Born on 5 May 1905 in Dandbose village of Mayurbhanj (present-day Odisha), Pandit Raghunath Murmu was deeply concerned by the absence of an independent and scientific script for the Santali language. Motivated by this need, he devised Ol Chiki as a structured and phonetic writing system capable of accurately reflecting the linguistic character of Santali. Through this script, he authored plays, songs, textbooks, and teaching materials that enabled literacy and cultural awareness among the masses. Revered as Guru Gomke, he emerged as a pioneer of cultural revival and intellectual self-expression. He passed away on 1 February 1982, leaving behind a legacy that continues to inspire generations.

Before the introduction of Ol Chiki, Santali—one of India's largest tribal languages—was predominantly sustained through oral traditions and written using Bengali, Odia, or Roman scripts. The invention of Ol Chiki provided Santali with an independent identity and ensured clear representation of its phonetic structure. The script was formally presented for the first time at the Mayurbhanj State Exhibition in 1939, marking an important milestone in its wider recognition and acceptance.

From the mid-twentieth century onwards, Ol Chiki became a powerful medium for literary, educational, and cultural advancement. Writers, teachers, artists, and cultural activists adopted it as a symbol of dignity, self-respect, and modernization. The script facilitated the publication of novels, poetry, grammar books, children's literature, magazines, and theatrical works, while also strengthening efforts to document folklore and oral traditions. These sustained developments ultimately contributed to the inclusion of the Santali language in the Eighth Schedule of the Constitution of India through the 92nd Constitutional (Amendment) Act on 22 December 2003.

Beyond its linguistic function, the Ol Chiki script has played a vital role in reinforcing cultural identity, community confidence, and knowledge traditions across Jharkhand, Odisha, West Bengal, Assam, and other regions. Today, it is widely used in education, research, public signage, cultural festivals, and institutional emblems, serving as a living symbol of Santali heritage.

The Department of Posts is pleased to issue a commemorative postage stamp to mark the centenary of the Ol Chiki script, honouring its creator and celebrating this distinctive cultural legacy, while reaffirming the nation's commitment to linguistic diversity and inclusive cultural heritage.

Credits:

Stamp/FDC/Brochure/ Cancellation Cachet : Ms. Nenu Gupta

Text: : Based on the content provided by the Ministry of Culture

भारतीय डाक
India Post
डाक विभाग
DEPARTMENT OF POSTS



पंडित रघुनाथ मुर्मू द्वारा विकसित ओल चिकी लिपि के 100 वर्ष
100 Years of Ol Chiki Script by Pandit Raghunath Murmu

विवरणिका BROCHURE

पंडित रघुनाथ मुर्मू द्वारा विकसित ओल चिकी लिपि के 100 वर्ष

पंडित रघुनाथ मुर्मू द्वारा 1925 में विकसित ओल चिकी लिपि, भारत के स्वदेशी भाषाई नवोन्मेष की परंपरा में एक ऐतिहासिक उपलब्धि है। 5 मई 1905 को मयूरभंज (वर्तमान ओडिशा) के दंडबोस गांव में जन्मे, पंडित रघुनाथ मुर्मू को संथाली भाषा की स्वतंत्र और वैज्ञानिक लिपि न होने का बड़ा क्षोभ था। इस कमी को पूरा करने के लिए उन्होंने संथाली के भाषाई चरित्र को सटीक रूप से प्रतिबिंबित करने में सक्षम, एक संरचित और ध्वन्यात्मक लेखन प्रणाली विकसित की जो ओल चिकी के रूप में प्रतिष्ठित हुई। इस लिपि की मदद से उन्होंने नाटक, गीत लिखे, पाठ्यपुस्तकें और शिक्षण सामग्री तैयार की, जो कालांतर में जनता के बीच साक्षरता और सांस्कृतिक जागरूकता का माध्यम बनी। संथाली के सांस्कृतिक पुनरुद्धार और बौद्धिक आत्म–अभिव्यक्ति के अग्रदूत और गुरु गोमके नाम से सुविख्यात पंडित रघुनाथ मुर्मू का निधन 1 फरवरी 1982 को हुआ। वे अपने पीछे ऐसी समृद्ध विरासत छोड़ गए जो वर्षों से पीढ़ियों को प्रेरित करती आ रही है।

ओल चिकी की शुरुआत से पहले, संथाली भाषा भारत की सबसे बड़ी आदिवासी भाषाओं में से एक थी। यह मुख्य रूप से मौखिक परंपराओं पर आधारित थी और इसे बंगाली, ओडिया अथवा रोमन लिपि की मदद से लिखा जाता था। ओल चिकी के आविष्कार ने संथाली को स्वतंत्र पहचान दिलाई और इसकी ध्वन्यात्मक संरचना की वास्तविक प्रतिनिधि बनी। इस लिपि को औपचारिक रूप से पहली बार वर्ष 1939 में मयूरभंज राज्य प्रदर्शनी में प्रस्तुत किया गया। जो इसे व्यापक मान्यता और स्वीकृति दिलाने में महत्वपूर्ण मील का पत्थर साबित हुआ।

बीसवीं शताब्दी के मध्य से, ओल–चिकी साहित्यिक, शैक्षिक और सांस्कृतिक उन्नति का एक शक्तिशाली माध्यम बनके उभरा। लेखकों, शिक्षकों, कलाकारों और सांस्कृतिक कार्यकर्ताओं ने इसे गरिमा, आत्म–सम्मान और आधुनिकीकरण के प्रतीक के रूप में अपनाया। यह लिपि न केवल उपन्यास, कविता, व्याकरण की पुस्तकों, बाल साहित्य, पत्र–पत्रिकाओं और नाट्य साहित्य के प्रकाशन का माध्यम बना बल्कि इसने लोककथाओं और मौखिक परंपराओं के दस्तावेजीकरण के प्रयासों को भी आधार दिया। इस लिपि में किए गए निरंतर सृजन और इसके विकसित स्वरूप काय 22 दिसंबर, 2003 को 92 वें संविधान (संशोधन) अधिनियम के माध्यम से संथाली भाषा को भारतीय संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल कराने में महत्वपूर्ण योगदान रहा।

ओल–चिकी लिपि ने अपनी भाषाई उत्कृष्टता की छाप छोड़ने के अलावा, झारखंड, ओडिशा, पश्चिम बंगाल, असम और अन्य क्षेत्रों में सांस्कृतिक पहचान, सामुदायिक आत्मविश्वास और ज्ञान परंपराओं को मजबूत करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। वर्तमान में, इस लिपि का शिक्षा, अनुसंधान, सार्वजनिक संदेशों, संस्थागत प्रतीकों और सांस्कृतिक उत्सवों में व्यापक रूप से उपयोग किया जाता है। यह संथाली जन–जीवन की समृद्ध विरासत के जीवंत प्रतीक के रूप में कार्य करता है।

डाक विभाग भाषाई विविधता और समावेशी सांस्कृतिक विरासत के प्रति देश की प्रतिबद्धता की पुष्टि करते हुए, ओल–चिकी लिपि के शताब्दी वर्ष के अवसर पर स्मारक डाक–टिकट जारी करते हुए प्रसन्नता का अनुभव करता है। यह स्मारक डाक–टिकट इस लिपि के प्रतिपादक और इस विशिष्ट सांस्कृतिक विरासत के प्रति सम्मान का प्रतीक है।

आभार :

डाक टिकट / प्रथम दिवस आवरण / विवरणिका / विरूपण कैशे : सुश्री नीनू गुप्ता

पाठ : संस्कृति मंत्रालय द्वारा प्रदत्त सामग्री पर आधारित।

तकनीकी आंकड़े
TECHNICAL DATA

मूल्य	:	500 पैसे
Denomination	:	500p
मुद्रित डाक टिकटें	:	202800
Stamps Printed	:	202800
मुद्रण प्रक्रिया	:	वेट ऑफसेट
Printing Process	:	Wet Offset
मुद्रक	:	प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद
Printer	:	Security Printing Press, Hyderabad

The philatelic items are available for sale at Philately Bureaus across India and online at
http://www.epostoffice.gov.in/PHILATELY_3D.html

© डाक विभाग, भारत सरकार। डाक टिकट, प्रथम दिवस आवरण तथा सूचना विवरणिका के संबंध में सर्वाधिकार विभाग के पास है।

© Department of Posts, Government of India. All rights with respect to the Stamps, Miniature Sheets, First Day Cover and Information Brochure rest with the Department.

मूल्य ₹ 15.00